हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम को अभी और सदा सर्वदा धन्य कहा जाए।
आपका स्वागत है। आइए, जीवन के वचनों को सीखने के लिए कुछ समय निकालें। आज हम बुलाहट के विषय पर विचार करेंगे और समझेंगे कि परमेश्वर की अनोखी योजना के अनुसार हर व्यक्ति की बुलाहट अलग-अलग हो सकती है।

आइए, इन वचनों को पढ़कर आरंभ करें:

मत्ती 11:18–19
“क्योंकि यूहन्ना न खाते हुए आया, न पीते हुए, और लोग कहते हैं, ‘उसमें दुष्टात्मा है।’
मनुष्य का पुत्र खाते-पीते आया, और वे कहते हैं, ‘देखो, पेटू और पियक्कड़, चुंगी लेने वालों और पापियों का मित्र!’ परन्तु बुद्धि अपने कामों से सही ठहराई जाती है।”

धार्मिक दृष्टिकोण
यहाँ यीशु अपने और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के बीच का अंतर दिखाते हैं। दोनों की बुलाहट परमेश्वर से थी, पर उनका जीवन-शैली एक-दूसरे से बहुत भिन्न थी। यूहन्ना संसार से अलग होकर, कठोर संयम का जीवन जीता था, जो पश्चाताप का चिन्ह था (मत्ती 3:4)।

दूसरी ओर, यीशु लोगों के बीच रहते थे, उनके साथ खाते-पीते थे, यह दिखाने के लिए कि उनका उद्देश्य प्रेम और सहभागिता के द्वारा पापियों को पश्चाताप की ओर बुलाना था। दोनों की जीवन-शैली परमेश्वर की उद्धार योजना का भाग थी, पर प्रत्येक की बुलाहट अलग और विशेष थी।

जैसा कि हम जानते हैं, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की बुलाहट यीशु के लिए मार्ग तैयार करना था (लूका 3:4)। उसका जीवन जंगल में, सांसारिक सुखों से दूर, पश्चाताप का प्रतीक था। इसके विपरीत, यीशु पूर्णतः परमेश्वर होते हुए भी लोगों के बीच रहने आए और समाज से जुड़े। इसका अर्थ यह नहीं कि यीशु ने पाप को स्वीकार किया, बल्कि वे दोष लगाने नहीं, चंगाई देने आए थे (लूका 5:31–32)।

अब एक और महत्वपूर्ण वचन पर ध्यान दें:

लूका 7:24–25
“जब यूहन्ना के दूत चले गए, तो वह यूहन्ना के विषय में लोगों से कहने लगे, ‘तुम जंगल में क्या देखने गए थे? क्या हवा से हिलने वाला सरकंडा?
फिर क्या देखने गए थे? क्या मुलायम कपड़े पहने हुए मनुष्य? देखो, जो शानदार वस्त्र पहनते और ऐश से रहते हैं, वे राजमहलों में होते हैं।’”

धार्मिक दृष्टिकोण:
यीशु यूहन्ना की सादगी की ओर ध्यान दिलाते हैं और लोगों को यह सोचने की चुनौती देते हैं कि परमेश्वर के दूत में वास्तव में क्या महत्वपूर्ण है। यूहन्ना धन, आराम या शक्ति से प्रभावित नहीं हुआ; वह जंगल में रहते हुए भी परमेश्वर की बुलाहट के प्रति विश्वासयोग्य रहा। इससे यह सच्चाई प्रकट होती है कि परमेश्वर के राज्य में महानता बाहरी दिखावे या सांसारिक पद से नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के प्रति विश्वासयोग्यता से मापी जाती है (मत्ती 5:3–12)।

यीशु का लोगों के बीच रहना हमें सिखाता है कि हमारी बुलाहट संसार से भागने की नहीं, बल्कि परमेश्वर के राज्य के लिए संसार में रहते हुए सेवा करने की है। जैसा कि लिखा है, हम संसार में तो हैं, पर संसार के नहीं हैं (यूहन्ना 17:14–16)।

यूहन्ना का संयमी जीवन और यीशु की पापियों के साथ सहभागिता

यूहन्ना का जीवन समाज से शारीरिक रूप से अलग था, जिसका केंद्र पश्चाताप और मसीह के आगमन की तैयारी था (मरकुस 1:6)। वहीं, यीशु की सेवकाई लोगों के साथ जुड़ने की थी, यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर का राज्य तिरस्कार नहीं, बल्कि उद्धार के बारे में है। दोनों परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहे थे, पर अलग-अलग तरीकों से।

1 कुरिन्थियों 7:20–22
“हर एक जिस बुलाहट में बुलाया गया था, उसी में बना रहे।
क्या तू दास होकर बुलाया गया? तो चिंता न कर; पर यदि स्वतंत्र हो सकता है, तो अवसर को उपयोग में ला।
क्योंकि जो दास होकर प्रभु में बुलाया गया है, वह प्रभु का स्वतंत्र किया हुआ है; वैसे ही जो स्वतंत्र होकर बुलाया गया है, वह मसीह का दास है।”

धार्मिक दृष्टिकोण:
पौलुस सिखाता है कि जीवन की परिस्थिति चाहे जो भी हो—स्वतंत्र हो या दास—हमारी असली पहचान मसीह में है। वह दासत्व की कठोरता को कम नहीं आंक रहा, बल्कि यह दिखा रहा है कि हमारी भौतिक स्थिति हमारी आत्मिक कीमत तय नहीं करती। हमारी बुलाहट हर हाल में मसीह की सेवा करने की है।

यह सिद्धांत आज भी लागू होता है। यदि परमेश्वर आपको किसी साधारण या विनम्र स्थिति में बुलाता है, तो इससे आपकी कीमत कम नहीं होती। आप फिर भी मसीह के सेवक हैं, एक अनन्त बुलाहट के साथ (गलातियों 3:28)। और यदि आपको स्वतंत्रता मिलती है, तो उस स्वतंत्रता का उपयोग परमेश्वर की महिमा के लिए करें (1 पतरस 2:16)।

नहेम्याह का उदाहरण

नहेम्याह की पुस्तक में हम एक अद्भुत उदाहरण देखते हैं। वह राजा का पिलानेहारा था—एक भरोसे और अधिकार का पद—फिर भी उसका हृदय यरूशलेम की टूटी हुई दशा के लिए बोझिल था (नहेम्याह 1:4)। परमेश्वर ने उसकी स्थिति का उपयोग करके यरूशलेम की शहरपनाह को फिर से बनवाया। यह हमें सिखाता है कि जहाँ कहीं भी परमेश्वर हमें रखता है, वहीं से हम उसके राज्य के लिए उपयोगी बन सकते हैं।

1 कुरिन्थियों 7:27–28
“क्या तू पत्नी से बंधा हुआ है? तो अलग होने का प्रयास न कर। क्या तू पत्नी से अलग है? तो विवाह की खोज न कर।
पर यदि तू विवाह करे, तो पाप नहीं करता; और यदि कुँवारी विवाह करे, तो वह भी पाप नहीं करती; तौभी ऐसे लोगों को शारीरिक कठिनाइयाँ होंगी, और मैं तुम्हें उनसे बचाना चाहता हूँ।”

धार्मिक दृष्टिकोण:
यहाँ पौलुस संतोष का पाठ सिखाता है। चाहे कोई विवाहित हो या अविवाहित, हर व्यक्ति की बुलाहट परमेश्वर की सेवा करने की है। पौलुस विवाह की निंदा नहीं कर रहा, बल्कि यह स्वीकार कर रहा है कि सांसारिक संबंधों में कुछ चुनौतियाँ होती हैं, जो कभी-कभी परमेश्वर के राज्य के कार्य से ध्यान हटा सकती हैं (मत्ती 19:29–30)।

पौलुस स्वयं अविवाहित था (1 कुरिन्थियों 7:8) और बताता है कि

अविवाहित व्यक्ति को प्रभु की सेवा में अधिक स्वतंत्रता मिल सकती है। फिर भी विवाह एक अच्छा और आदरणीय बुलाहट है (इब्रानियों 13:4), और जो इसमें बुलाए गए हैं, उन्हें उसी में विश्वासयोग्य रहकर परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए।

मत्ती 19:11–12
“यीशु ने उनसे कहा, ‘सब लोग यह बात नहीं समझ सकते, केवल वे ही जिनको यह दिया गया है।
क्योंकि कुछ खोजे ऐसे हैं जो माता के गर्भ से वैसे ही जन्मे; और कुछ खोजे ऐसे हैं जिन्हें मनुष्यों ने खोजा बनाया; और कुछ खोजे ऐसे हैं जिन्होंने स्वर्ग के राज्य के लिए अपने आप को खोजा बनाया है। जो इसे समझ सकता है, वह समझे।’”

धार्मिक दृष्टिकोण:
यहाँ यीशु उन लोगों के विषय में बताता है जो परमेश्वर के राज्य के लिए अविवाहित रहते हैं। वह स्पष्ट करता है कि हर कोई विवाह के लिए नहीं बुलाया गया। जो लोग अविवाहित रह सकते हैं, उनके लिए यह परमेश्वर के कार्य में पूरी तरह समर्पित होने का एक मार्ग हो सकता है। यहाँ “खोजे” उन लोगों को दर्शाते हैं जो जन्म, परिस्थिति या चुनाव के द्वारा परमेश्वर की सेवा के लिए अलग जीवन जीते हैं (मत्ती 6:33)।

निष्कर्ष: अपनी अनोखी बुलाहट को अपनाइए

परमेश्वर की बुलाहट हर एक के लिए अलग और उद्देश्यपूर्ण है। जैसे यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की बुलाहट मार्ग तैयार करने की थी, और स्वयं यीशु की बुलाहट उद्धार लाने की थी, वैसे ही हम में से प्रत्येक को किसी विशेष उद्देश्य के लिए बुलाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह नहीं कि हम दूसरों की बुलाहट से अपनी तुलना करें, बल्कि यह कि जहाँ परमेश्वर ने हमें रखा है, वहीं विश्वासयोग्य होकर उसकी सेवा करें।

पौलुस के शब्दों को स्मरण रखें:

1 कुरिन्थियों 12:12–14
मसीह की देह एक शरीर के समान है, जिसमें हर अंग आवश्यक है और हर एक की अपनी भूमिका है।

चाहे आप स्वतंत्र हों या अधिकार के अधीन, विवाहित हों या अविवाहित—आपकी बुलाहट परमेश्वर के राज्य के निर्माण के लिए महत्वपूर्ण है। देह का हर अंग मूल्यवान है।

परमेश्वर आपको आशीष दे।
कृपया इस शुभ समाचार को दूसरों के साथ भी साझा करें।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp